बाइबल में धूपदान क्या है? (लैव्यव्यवस्था 10:1)

धूपदान एक छोटा बर्तन होता है, जिसका इस्तेमाल पुरोहित टेंट ऑफ़ मीटिंग (परमेश्वर की सभा का तंबू) या बाद में मंदिर में धूप जलाने के लिए करते थे। धूप जलाना एक पवित्र अनुष्ठान था, जो उपासना और परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता था।

किसी भी पुरोहित को अपने पवित्र कर्तव्यों को निभाने से पहले धूपदान में धूप जलानी आवश्यक थी। इसके लिए वे वेदी की आग से कोयले लेते थे, जो पवित्र स्थान (Holy of Holies) के बाहर धूप की वेदी पर जलते थे। इस प्रक्रिया से पवित्र स्थान सुगंधित धुएँ से भर जाता था, जो परमेश्वर की प्रजा की प्रार्थनाओं और उपासना का प्रतीक था, जो सीधा परमेश्वर तक पहुँचती थी।

निर्गमन 30:34–35 (हिंदी आम जन भाषा) में परमेश्वर ने धूप बनाने का तरीका बताया:

“और यहोवा मूसा से बोला, ‘स्वादिष्ट मसाले ले—स्तैक्टे,
ओनिका, और गलबनम; इन स्वादिष्ट मसालों को शुद्ध लोबान के साथ मिलाकर… और इसे दवा बनाने वाले की कला के अनुसार तैयार कर, शुद्ध और पवित्र सुगंध बनाए।’”

इस धूप से उठने वाला धुआँ परमेश्वर को प्रिय पवित्र सुगंध माना जाता था, और यह दर्शाता था कि परमेश्वर अपनी प्रजा से मिलने के लिए उपस्थित हो रहे हैं (निर्गमन 30:7–8)।

यदि कोई पुरोहित इस अनुष्ठान को अनदेखा करता या बिना परमेश्वर की अनुमति के अग्नि या मसाले का इस्तेमाल करता, तो यह बड़ा पाप माना जाता था (लैव्यव्यवस्था 10:1–2, निर्गमन 30:9, गिनती 3:4)। यह उपासना में पवित्रता और श्रद्धा की आवश्यकता को दर्शाता है।

भौतिक धूप से आध्यात्मिक उपासना तक

पुराने नियम में, धूप और धूपदान उपासना और प्रार्थना के मूर्त प्रतीक थे। लेकिन यीशु के आगमन और नए वाचा (New Covenant) की स्थापना के बाद, उपासना का स्वरूप बदल गया।

अब हम भौतिक धूप नहीं जलाते, क्योंकि मसीह के बलिदान ने नियम को पूरा कर दिया और पशु बलिदानों तथा अनुष्ठानों की जगह ले ली (इब्रानियों 10:1–18)। हमारी उपासना अब आध्यात्मिक और हृदय से होती है।

इब्रानियों 13:15 (हिंदी आम जन भाषा) कहता है:

“इसलिए हमें मसीह के द्वारा परमेश्वर को हमेशा प्रशंसा का बलिदान चढ़ाना चाहिए, अर्थात् अपने होठों के फलों द्वारा
उसके नाम का धन्यवाद करना।”

हमारी प्रार्थनाएँ और स्तुति उसी तरह स्वर्ग में परमेश्वर तक उठती हैं, जैसे धूप का धुआँ (प्रकाशितवाक्य 5:8)।

आध्यात्मिक दृष्टि से धूपदान का प्रतीक

आध्यात्मिक रूप से, धूपदान मानव हृदय का प्रतीक है। जैसे धूपदान में आग जलाकर धूप जलाई जाती है, वैसे ही हमारा हृदय पवित्र आत्मा द्वारा प्रज्वलित होना चाहिए, ताकि हमारी प्रार्थना और उपासना परमेश्वर के सामने स्वीकार्य हो।

प्रकाशितवाक्य 8:3–4 (हिंदी आम जन भाषा) में लिखा है:

“एक अन्य देवदूत आया और वह वेदी के पास खड़ा हुआ, उसके हाथ में सोने का धूपदान था; उसे बहुत सी धूप दी गई, ताकि वह इसे सभी संतों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की वेदी पर अर्पित करे, जो सिंहासन के सामने थी।”

यह दिखाता है कि धूप परमेश्वर की प्रजा की प्रार्थनाओं से जुड़ी है, और धूपदान वह स्थान है जहां प्रार्थनाएँ परमेश्वर के आत्मा द्वारा “प्रज्वलित” होती हैं।

इसलिए, अपने हृदय को पवित्र बनाए रखना और उसकी रक्षा करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हृदय से ही हमारे आध्यात्मिक जीवन की गुणवत्ता निकलती है।

नीतिवचन 4:23 (हिंदी आम जन भाषा) में लिखा है:

“अपने हृदय की पूरी रक्षा करना, क्योंकि जीवन की धारा वहीं
से निकलती है।”

हे प्रभु, हमारे हृदय को अपने आत्मा से प्रज्वलित रखकर हमें सच्ची प्रार्थना और उपासना अर्पित करने की शक्ति दें।

Share on:
WhatsApp